नरेश मेहता के गद्य साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

[1]दिनेश भ्याण*, [2]डॉ. राजकुमार एस. नाईक

[1]शोधार्थी (Reg. No Dr./Ph.d.(H)05/2019), [2]शोध निर्देशक
[1]उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़ (कर्नाटक शाखा)
डी.सी. कम्पाउंड, धारवाड़–580001
[2]सह प्राध्यापक, स्नातकोत्तर विभाग
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़ (कर्नाटक) अनुसंधान केन्द्र, भारत

Email ID: *dinubhyan2121@gmail.com*

Accepted: 11.03.2022 **Published**: 01.04.2022

मुख्य शब्दः नरेश मेहता का गद्य साहित्य, सांस्कृतिक गतिविधि, औपचारिक, विज्ञान की जटिलता।

शोध आलेख सार

आजादी के पश्चात रहन–सहन, औपचारिकता, विवाह–पद्धति रूढि–परंपरा तथा पारिवारिक स्थिति में बदलाव आया, लेकिन उत्सव और त्योहारों में थोडा ही बदलाव आया। देश में दीवाली, गणेश उत्सव, क्रिसमस जैसे त्यौहार मनाए जाते हैं। यह सब भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। भारत धर्म प्रधान देश है। भारत में अलग–अलग जाति, धर्म के लोग रहते हैं। हर धर्म के उत्सव व त्यौहार अलग–अलग हैं। इन सभी धर्मों में व त्यौहारों में भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती है। डॉ. हेमेन्द्रकुमार के मतानुसार "भारतीय संस्कृति में धर्म का प्रगाढ संबंध है। सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का मूलाधार भी धर्म ही रहा है। परंपरा में धर्म जीवन के प्रत्यक्ष नहीं देखा गया, भारतीय जीवन की प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से धर्म के प्रति आस्था अपने आप में एक विशेषता रही है।"

पहचान निशान

**Corresponding Author*

नरेश मेहता ने अपने साहित्य में समाज में होने वाली समस्याओं का वर्णन किया है कि मनुष्य किस प्रकार समाज में राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर ध्यान करता है। मानव जीवन का अंग समस्या ही है। उनके जीवन में समस्याओं का प्रमुख प्रभाव देखा जाता है। इतना ही मनुष्य संघर्ष कर ले फिर भी समस्या बन जाती है। पश्चात्य संस्कृति के अनुसार परिवार में समस्या के संदर्भ में डॉक्टर ज्ञान अस्थाना लिखते है "आधुनिक युग में विज्ञान की जटिलताओं को

बहुत बड़ा दिया है और मनुष्य चारों ओर से विविध समस्याओं से घिरा हुआ है।

साहित्य में मानव जीवन की अभिव्यक्ति होती है। इस कारण आज साहित्यकार युग जीवन की इन विषमताओं और समस्याओं से विमुख नहीं हो सकता'' नरेश मेहता के कथा साहित्य में अनेक प्रकार की समस्याओं का वर्णन किया गया है। समाज की इकाई परिवार और व्यक्ति होता है। इन समस्याओं पर लेखक ने वर्णन किया है। संयुक्त परिवार और एकल परिवार का योग है आर्थिक विषमता। आर्थिक विषमता के कारण समाज में समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, जिन का चित्रण नरेश मेहता ने अपनी कथा साहित्य में किया है। यह पथ बंधु था, जिसमें संयुक्त परिवार का वर्णन किया गया है। श्री नाथ ठाकुर के तीनों बेटों की शादी हुई थी। उस समय संयुक्त परिवार था शादी के बाद लड़ाई झगड़ा करके सभी अपनी–अपनी पत्नियों को लेकर अलग अलग हो गए। इससे तंग आकर श्री नाथठाकुर अपनी पत्नी से तंग आ जाते हैं और कहने लगते हैं।

"ठीक है श्री मोहन अलग हो जाए तो रोज–रोज की झंझट मिटै। नहीं, यह नहीं होगा, जब तक मैं बैठी हूं घर का बँटवारा नहीं हो सकता। लेकिन तुम्हारे कहने की जरूरत नहीं है? उसका तो अंग्रेजी फैशन का मकान छावनी में बन रहा है।'' इस प्रकार कहा जा सकता है, परिवार में समस्या उत्पन्न हो चुकी है। 'प्रथम फागुन' नामक उपन्यास में दो परिवारों का वर्णन किया गया है। जिसमें पहली पत्नी श्रीमती नाथ और उसकी बेटी वृदांवन धाम में रहती है। उसकी दूसरी पत्नी बेटे को लेकर दूसरे स्थान यानी अलग रहती है। इंदरनाथ ने अपना दूसरा विवाह संतान प्राप्ति के लिए किया था। शादी करने के बाद दोनों पत्नियों से पुत्र प्राप्ति हो गई और दोनों पत्नियों में लड़ाई झगड़ा होता था। इस प्रकार दोनों का मनमुटाव देखकर इंदर नाथ को विवश होकर दूर जाना पड़ा। 'धूमकेतुः एक श्रुति' नामक उपन्यास में इच्छा शंकर, सूर्या शंकर और रतन शंकर ने अपने तीनों बेटों को पढ़ा लिखा कर बड़ा किया था। बहुत मेहनत करके उसे आगे पहुंचाया। उसके बाद रतन शंकर की मृत्यु हो जाती है। इच्छा और सूर्य शंकर अपना व्यवसाय मिलने के कारण गांव छोड़ कर चले जाते हैं। लज्जा शंकर अपने पुत्रों को नौकरी मिल जाने के बारे में सोचता है कि इतनी मेहनत से पढ़ाई की है। कभी न कभी जरूर कामयाब हो जाएंगे। इसके बारे में वह लगातार सोचता है और कहता है–

"लक्ष्मी आती है तो बहुत कुछ छिन भी जाता है, अब वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे लेकिन उनका परिवार उनसे छीन लिया था'' अपनी आर्थिक स्थिति को देखते हुए लज्जा शंकर को नौकरी करनी पड़ी। इस प्रकार कहा जाता है कि व्यक्ति को जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ता है। उत्तरकथा में नरेश मेहता ने ब्राह्मण और मालवा के रहने वाले परिवारों का वर्णन किया है। वहां पर अनेक प्रकार का चित्रण मौजूद है। उस गांव में ज्यादा लोग हैजा की बीमारी के कारण मर रहे थे– उसका चित्रण उन्होंने किया है। दुर्गा का बड़ा भाई और छोटा भाई दोनों हैजा की बीमारी के कारण मर गए। उसका पिता भी मर गया। इसके कारण सास और बहू के बीच में द्वंद चलता रहता था और आपस में लड़ाई झगड़ा होता रहता था।

कृष्णा देवी जो अपनी बहू पर बहुत ज्यादा शोषण और अत्याचार करती थी।

इस प्रकार दुर्गा अनेक समस्याओं का सामना करती रहती थी। आर्थिक स्थिति के कारण विश्वनाथ अपने रास्ते से अलग होकर गलत कार्य करने लगते हैं। दहेज के लालच में आकर कृ ष्णावती अपनी बहू को बदनाम करने की कोशिश करती है। इस बात को सुनकर उसकी मां गंगा देवी और विश्वनाथ की मौत हो जाती है और यह लड़ाई खत्म हो जाती है। इस प्रकार नरेश मेहता ने समझाया है कि लोग परिवार में बहू पर शोषण अत्याचार करते रहते हैं। दहेज के कारण और आर्थिक समस्याओं के कारण मनुष्य ने नैतिक मूल्यों को भुला दिया है। सास, बहू, भाई, बहन का झगड़ा संयुक्त परिवार में होता रहता है। इसके एक प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है "जब कभी दोनों भाइयों में झड़प होती है, तब उसका अंत हाथापाई में होता है। दोनों की मारपीट में लीची बचाने जाती है। सासू जी पर टूट पड़ती है भाइयों की लड़ाई तथा सास बहू की गाली गलौज, मारपीट में भी कल्लू देखता रहता हैं।"

परिवार की समस्याओं को देखते हुए कल्लू की पत्नी बीमार हो जाती है। आर्थिक समस्याओं के कारण उसे कुछ दवाई नहीं मिल पाती और वह तड़पती रहती है। इस कारण उसकी मौत हो जाती है। इसी प्रकार नरेश ने अपने कथा साहित्य में परिवार की समस्याओं और समस्त रचनाओं का विविध वर्णन किया है। इस पर डॉ शंकर वसंत मुद्गल लिखते हैं "नरेश मेहता के 'यह पथ बंधु था' नामक उपन्यास में राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का विराट रूप में चित्रण हुआ है। वर्तमान में परिवार के संबंध दिन–ब–दिन बिगड़ते जा रहे हैं। भाई भाई, पिता–पुत्र, सास–बहु, देवरानी–जेठानी के परंपरागत संबंधों में परिवर्तन हो रहा है। आज उनमें पहले जैसी प्रेम आदि भावनाओं को स्थान नहीं बल्कि घृणा, द्वेष, स्वार्थ आदि के कारण पारिवारिक जीवन आज मैला हो गया है।"

इस प्रकार नरेश मेहता की रचनाओं में बदलते समाज का वर्णन किया गया है। स्त्री पुरुष अपने परिवार को चलाने के लिए अनेक प्रकार के घिनौने काम करते हैं और लड़ाई झगड़ा करते हैं। पति–पत्नी के बीच में प्रेम का संबंध नहीं होता तो पारिवारिक समस्या बनी रहती है। परिवार को चलाने के लिए एक सुचारू रूप से प्रणाली का वर्णन किया जाता है। इस बार डॉक्टर गीत लाल जी लिखते हैं "पुरुष और नारी के पारस्परिक संबंधों में पति पत्नी संबंध शुभ होते हैं। आदिकाल से ही स्त्री और पुरुष ने पारस्परिक आकर्षण का अनुभव किया है और प्राय: सभी सभ्य समाजों में उन्होंने इसे विवाह के रूप में स्थायित्व प्रदान किया है। सुखी और तृप्त ग्रस्त जीवन समस्त सुखों का मूल है तथा संतोषपूर्ण जीवन यात्रा को आनंददायक बना देता है।"

नरेश मेहता के साहित्य में टूटते परिवारों का और पति–पत्नी के बिगड़ते संबंधों का एवं अनेक समस्याओं का वर्णन दिखाई देता है। 'डूबते मस्तूल' नामक उपन्यास में मेजर और रंजना के पति पत्नी के अनैतिक संबंध दिखाई देते हैं। रंजना है जो अपने पति की मौत के बाद किसी दूसरे व्यक्ति के साथ गलत संबंध बना लेती है। वह मुंबई में आकर कुलकर्णी के साथ शादी कर लेती है।

रंजना का पहले एक पुत्र भी था। कुलकर्णी रंजना की सुंदरता को देखकर मोहित हो जाता है और उसके जाल में फंस जाता है। उसके साथ प्रेम संबंध बना लेता है। जिससे दोनों का मिलन हो जाता है इसका एक सुंदर चित्रण यहां पर प्रस्तुत है।

. भारत अहिंसावादी देश है। देश ने आजादी के बाद प्रजातंत्र को माना। डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने माना है "भारत ने संपूर्ण इतिहास में किसी दूसरे देश पर न तो सशस्त्र आक्रमण किया था ना उसे हड़प जाने की चेष्ठा की थी। उसने हमेशा 'जीयों और जीने दो' की नीति में विश्वास किया, मैत्रीभाव और सहिष्णुता में आस्था रखी। फिर महात्मा गांधी भी सत्य और अंहिंसा को अपना आदर्श मानकर देश के सामने रख चुके थे।"आजादी के पश्चात् भी भारत ने अंहिसा नीति को अपनाने का प्रयत्न किया है। आजादी के पश्चात् नगरों महानगरों में शिक्षा के प्रचार से नारी आधुनिक बनी। वह समाज में सभी क्षेत्रों में पुरूष के साथ काम करने लगी। नारी नौकरी भी करने लगी और साथ में सामाजिक कार्यों में भी भागीदारी बढ़ाने लगी। शहर विज्ञान व औद्योगिकता के कारण आधुनिकता की और बढने लगे। बडी मात्रा में गाँवों में शिक्षा का प्रचार नहीं हो पाया। गाँवों की महिलाएँ सांस्कृतिक व सामाजिक बँधनों में बँधी रही। गाँवों में समाज के अनुसार नारी मर्यादा पालन का बोझ लिए फिरती रही। सिर झुकाकर रहना व आँचल ओढ़कर चलना– इन बँधनों से उसे सब सहना पडता है। सन् 1969 मे महाराष्ट्र शासन की ओर से खेल में 'छत्रपति पुरस्कार' की शुरूआत हुई। भारतीय समाज ने खेल कूद के साथ सभी क्षेत्रों में क्रांति मचाई। वर्तमान युग विज्ञान का युग माना जाता है। पहले बादलों की इच्छा से वर्षा होती थी मगर आज के आधुनिक युग में मनुष्य विज्ञान के बल पर वर्षा करवाने का प्रयत्न कर रहा है। डॉ. हेमेंद्र कुमार पानेरी का मत है कि "आधुनिक संस्कृति पर विज्ञान प्रभावी है। अब महानगर संस्कृति के केन्द्र बन गए है। परंपरागत संस्कृति का मशीनी उद्योगों से कोई संबंध नहीं था। परंतु वर्तमान संस्कृति मशीनी–उद्योगों में पनप रही है। साथ ही आण्विक युद्ध की संभावनाएँ बढ गई हैं। संस्कृति पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। किसी भी समय हमारा सब कुछ रसातल में मिल सकता है। लगता है हम उत्थान से पतन की और जा रहे हैं।"

निष्कर्ष :

आज कई राष्ट्रों के पास अणुबम, हाईड्रोजन बम है, जो नुकसानदेह साबित हो गये है। भारत के समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का बुरा असर होने लगा है। विज्ञान तथा आधुनिकता के नाम पर भारतीय समाज अपने देश की संस्कृति तथा परंपराओं से भिन्न दिखाई देता है। आधुनिक युग में पारिवारिक संबंधों के मूल्य खत्म हुए हैं। प्राचीन भारत की संस्कृति से मनुष्य दूर होता जा रहा है। नरेश मेहता ने युग पृष्ठभूमि से प्रभावित होकर ही साहित्य लिखा है। उसका साहित्य उस युग की पृष्ठभूमि को दर्शाता है। आलोचक जीवन शैली से संबंधित दृश्यों व तथ्यों का चित्रण अपने साहित्य में अंकित करने का प्रयत्न करता है। जिस पृष्ठभूमि में लेखक के चरित्र का निरूपण व विकास होता है। उन पृष्ठभूमियों का प्रभाव उस पर होना अनिवार्य है। 15 फरवरी 1922 में नरेश मेहता का जन्म हुआ और व स्वातंत्र्यपूर्ण काल से संबंधित

रहे। उनके चेतन तथा अचेतन मन पर उन परिस्थितियों का बहुत ही गहरा प्रभाव होना नहीं कहा जा सकता। नरेश मेहता के मतानुसार "बचपन से ही अकेला रहा, अपने भीतर लगा कि एक प्रकार ही विनम्रता के द्वारा ही अपने विद्रोह को व्यक्त किया जा सकता है। कुछ पारिवारक कारणों से कुछ वंशानुगतता फल से यह भाव मेरे मन में विकसित हुआ। परिस्थितियाँ भी थी चूँकि विभिन्न परिवारों में रहा और विभिन्न परिवारों में रहने का मतलब मन मारना पड़ा"।

अतः यहाँ लेखक के अंतकाल की विद्रोही तथा जिज्ञासु वृति का परिचय दिया है। नरेश मेहता के उपन्यास व कहानियों के प्रकाशन की शुरुवात स्वातंत्र्योत्तर काल में हुई। इनका कथा साहित्य उस काल और समय की मुख्य उपलब्धि है।